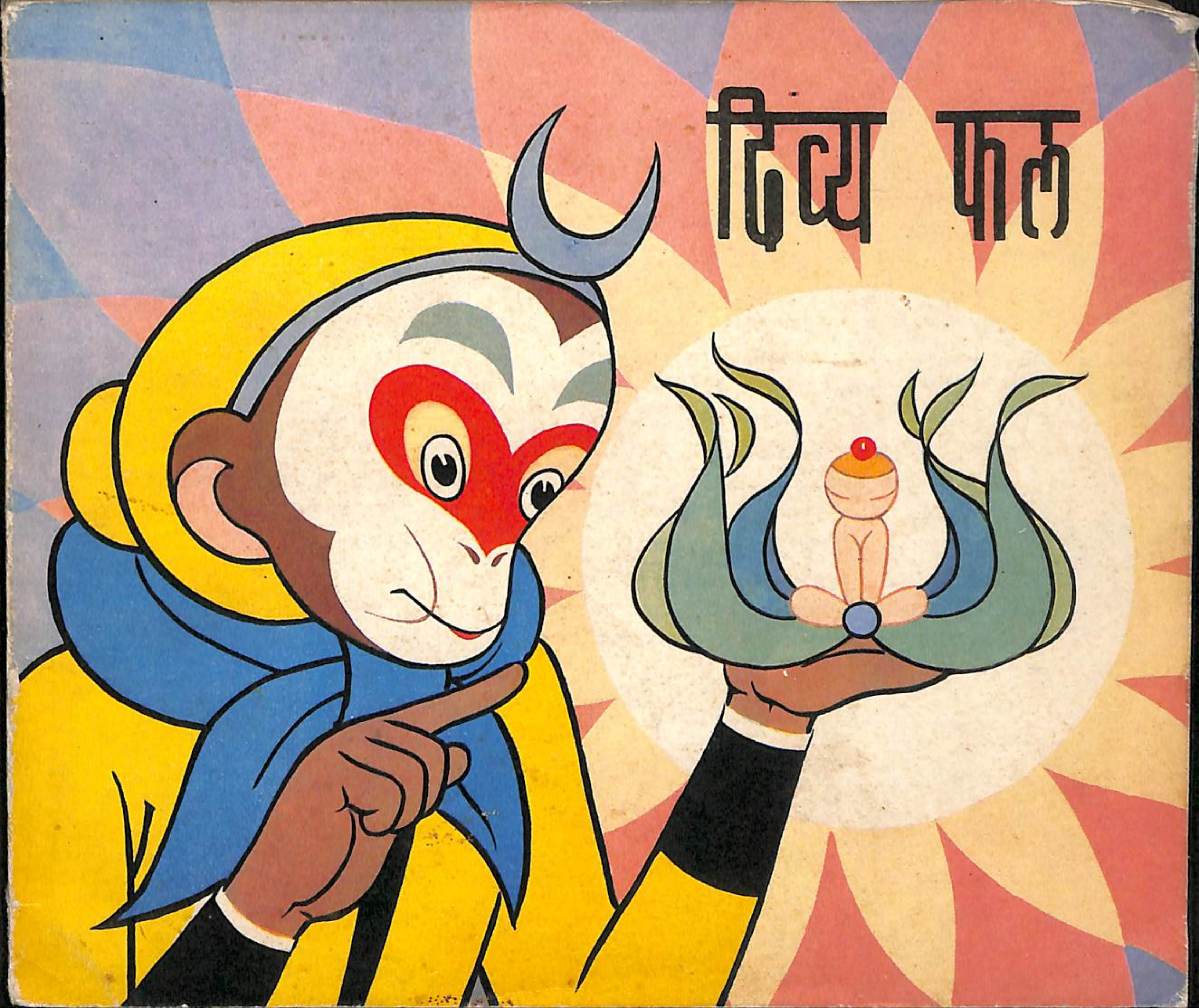
दिव्य फल



संक्षिप्त परिचय व कथासार

आज से लगभग १,३०० साल पहले, चीन के सुप्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु श्वेन च्वाङ ने बौद्धग्रन्थ प्राप्त करने के उद्देश्य से तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना करते हुए भारत की यात्रा की थी। उसकी इस यात्रा को आधार बनाकर, सोलहवीं शताब्दी के मशहूर चीनी लेखक ऊ छङअन ने अपना विख्यात पौराणिक उपन्यास "पश्चिम की तीर्थयात्रा" लिखा था। "दिव्य फल" नामक यह चित्रकथा इसी नाम की एक प्रसिद्ध रंगीन चीनी कार्टून फिल्म पर आधारित है, जिसका कथानक उक्त उपन्यास के ही एक प्रसंग से लिया गया है।

कहानी संक्षेप में इस प्रकार है : बौद्ध भिक्षु थाङसङ अपने तीन शिष्यों के साथ बौद्ध सूत्र लेने भारत की तीर्थयात्रा करने जाते हैं। रास्ते में वे लोग विश्राम करने के लिए एक ताओ मंदिर में ठहरते हैं, जहां थाङसङ के तीनों शिष्य दूसरों की नजर बचाकर "रनशन" नामक दिव्य फल खा लेते हैं। जब मंदिर में रहने वाले ताओ बालक इसका विरोध करते हैं, तो थाङसङ के तीन शिष्यों में से एक वानरराज सुन ऊखुङ उस वृक्ष को ही उखाड़ डालता है जिस पर वे फल लगते हैं। मंदिर के स्वामी चनय्वान नामक एक ताओपंथी ऋषि हैं, जो घटना के समय वहां मौजूद नहीं थे। वापस लौटने पर उन्हें सारी घटना का पता चलता है। वे सुन ऊखुङ से तीव्र संघर्ष करते हैं और उन चारों को बन्दी बनाकर थाङसङ को सजा देने का आदेश देते हैं। तब सुन ऊखुङ अपनी गलती मान लेता है और दिव्य वृक्ष को फिर से जीवित करने के लिए भगीरथ प्रयत्न करता है। इससे ताओपंथी ऋषि चनय्वान और बौद्ध शिष्य सुन ऊखुङ के बीच बिरादराना सम्बन्ध कायम हो जाते हैं तथा भिक्षु थाङसङ व उसके तीनों शिष्य भारत जाने के लिए अपनी यात्रा पुनः शुरू कर देते हैं।



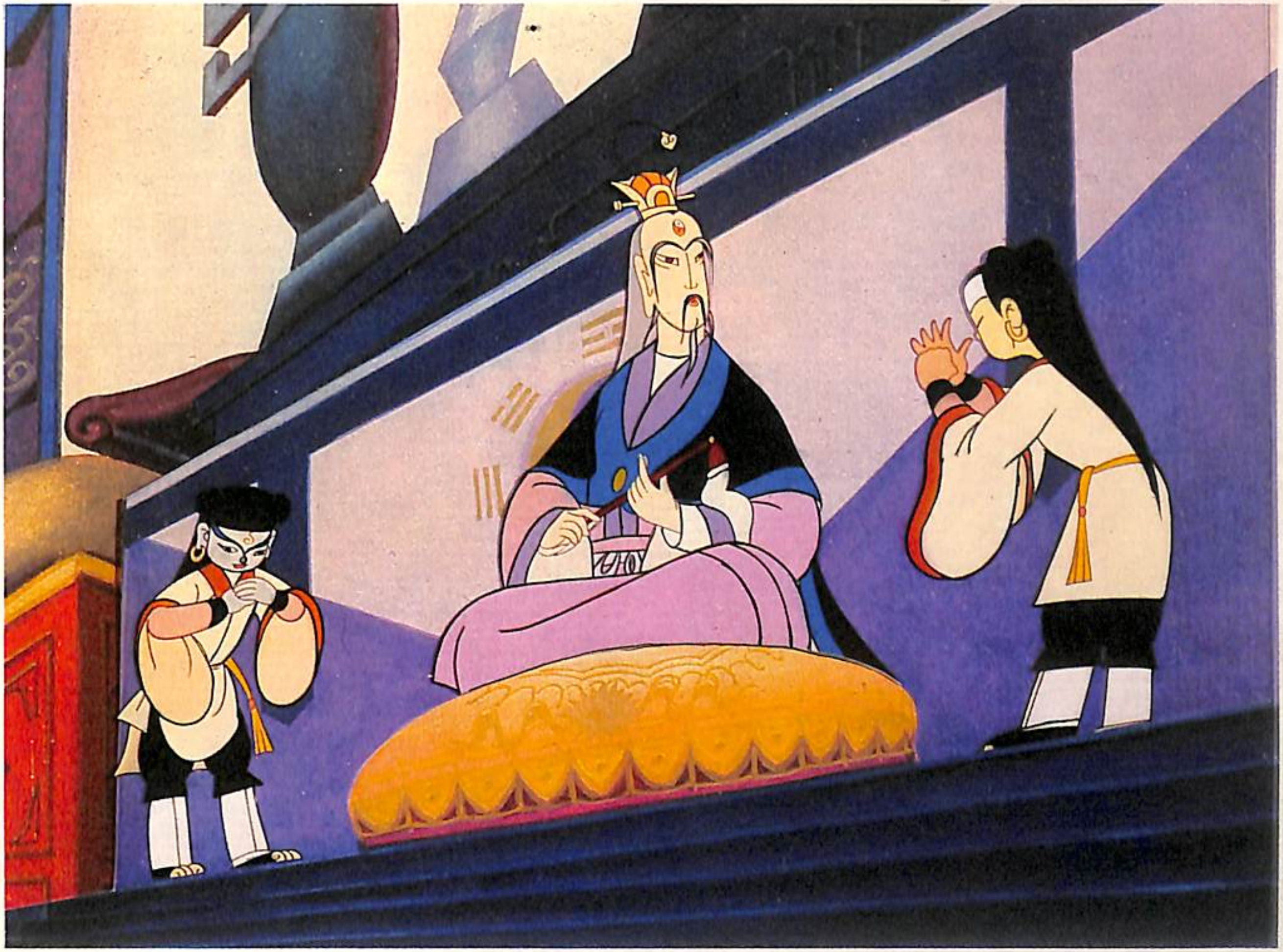
दिव्य फल

सम्पादक व चित्रकार : **मेइ इङ**

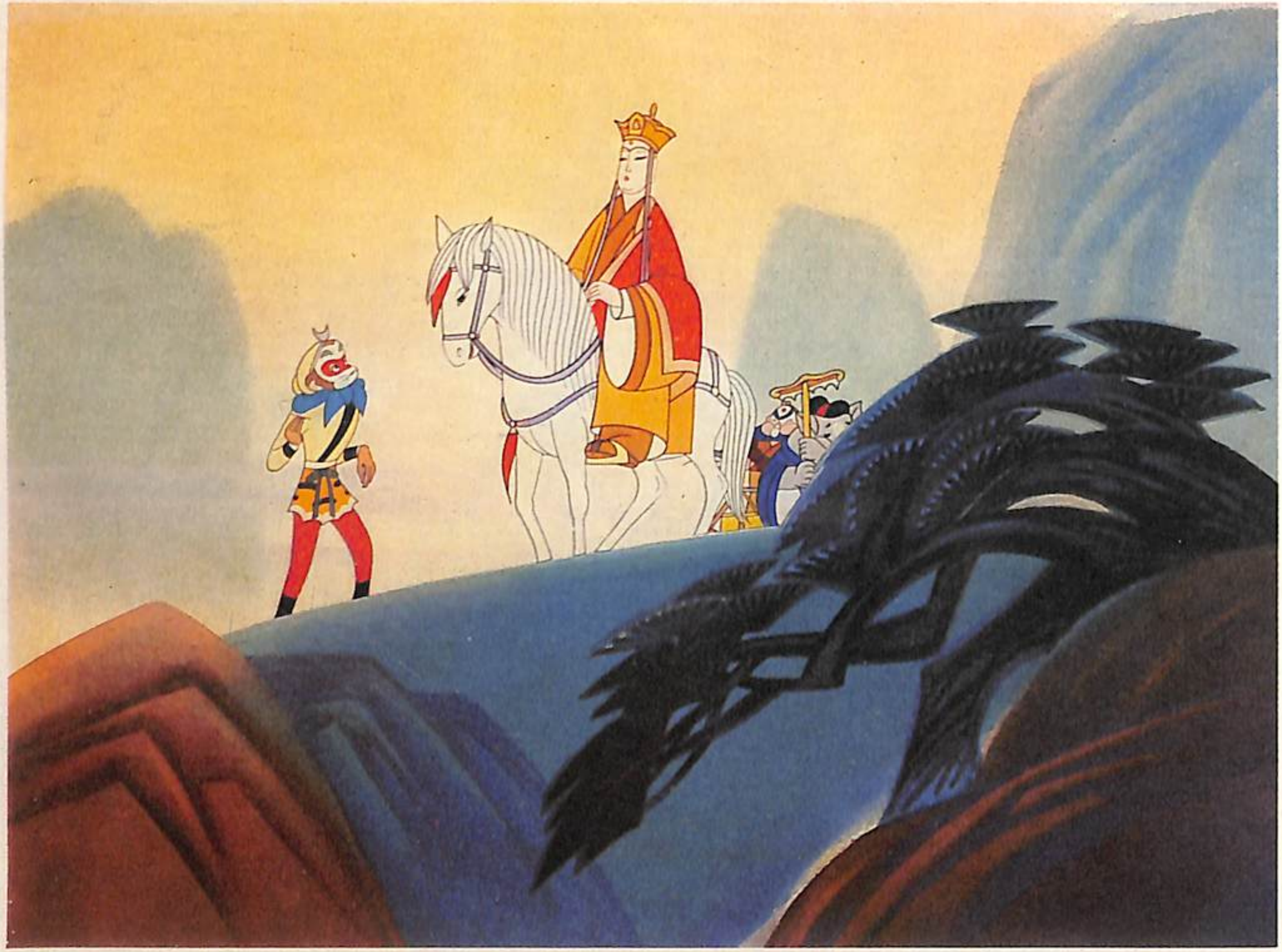
विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ



वानशश्रोशान पर्वत पर ऊच्वाङ नामक एक ताश्रो मन्दिर था, जिसके स्वामी महर्षि चनय्वान श्रपने शिष्यों को ताश्रो धर्मग्रन्थ पढ़ाया करते थे ।



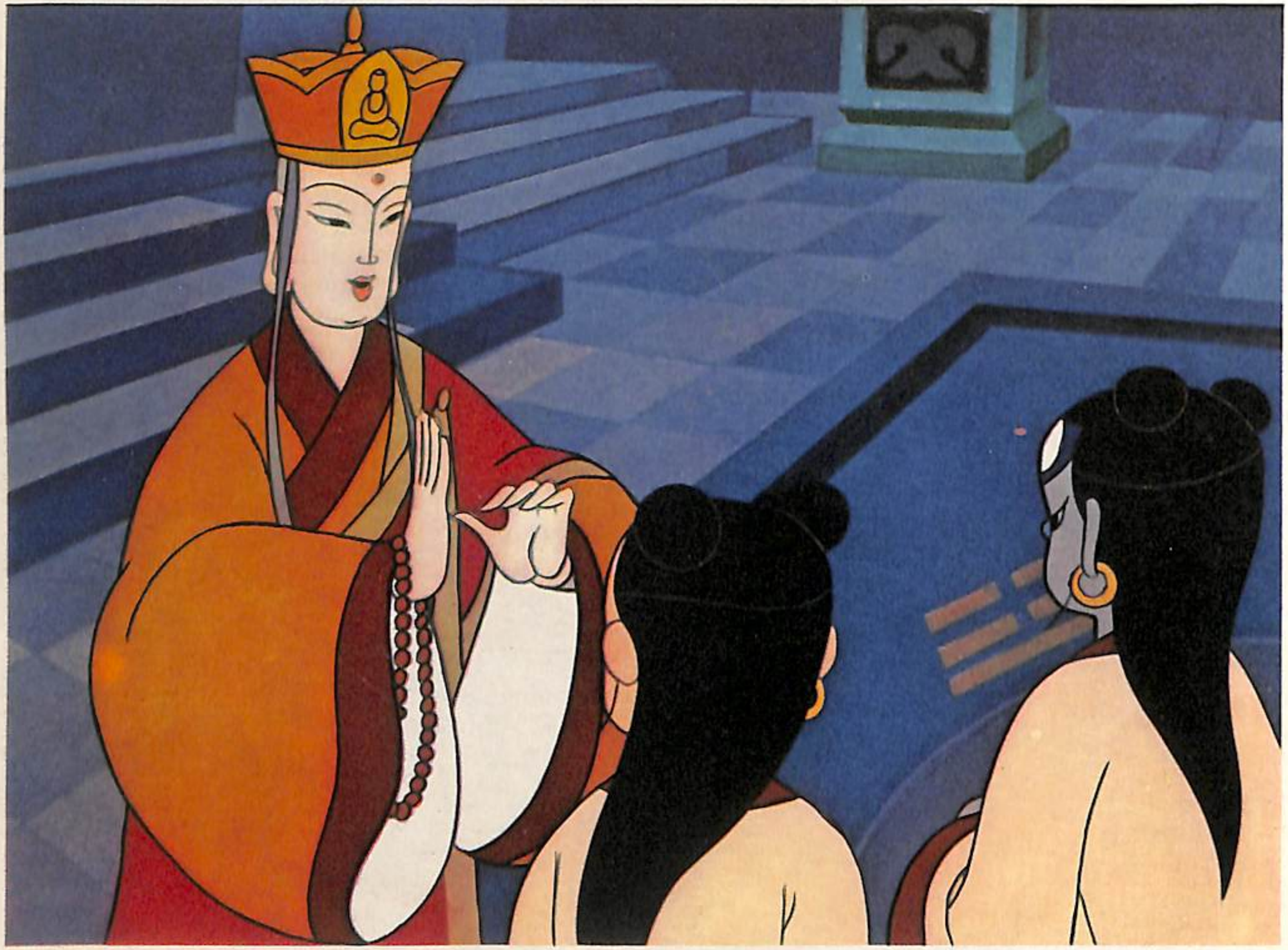
एक दिन महर्षि चनय्वान को किसी काम से कहीं जाना था। जाने से पहले उन्होंने अपने दो बालशिष्यों छिङफ़ङ और मिङय्वे से कहा : "अगले कुछ दिनों में मेरे एक पुराने मित्र यहां से गुजरेंगे। तुम दोनों उनका अच्छी तरह स्वागत-सत्कार करना और उन्हें 'रनशन' नामक दो दिव्य फल खाने के लिए देना।"



भिक्षु थाङसङ बौद्धग्रन्थ प्राप्त करने के लिए अपने तीन शिष्यों के साथ भारत की यात्रा पर जा रहे थे। चलते-चलते वे वानशओशान पहाड़ पर पहुंचे। वहां का दृश्य उन्हें बहुत सुन्दर व आकर्षक लगा।



उन चारों ने ऊच्वाङ मंदिर में विश्राम करने का निश्चय किया ।



मन्दिर के वृहद भवन में प्रवेश करते ही थाङसङ की भेंट महर्षि चनय्वान के दो वालशिष्यों से हुई। उन्होंने उन वालकों को ग्राशीर्वाद दिया ग्रौर पूछा : "क्या महर्षि चनय्वान घर पर हैं ?" ताम्रो वालकों ने जवाब दिया : "गुरु जी तो घर में नहीं हैं। वे किसी काम से कुछ दिनों के लिए वाहर गए हुए हैं। जाते समय उन्होंने हमें ग्राप लोगों का स्वागत करने को कहा था।"



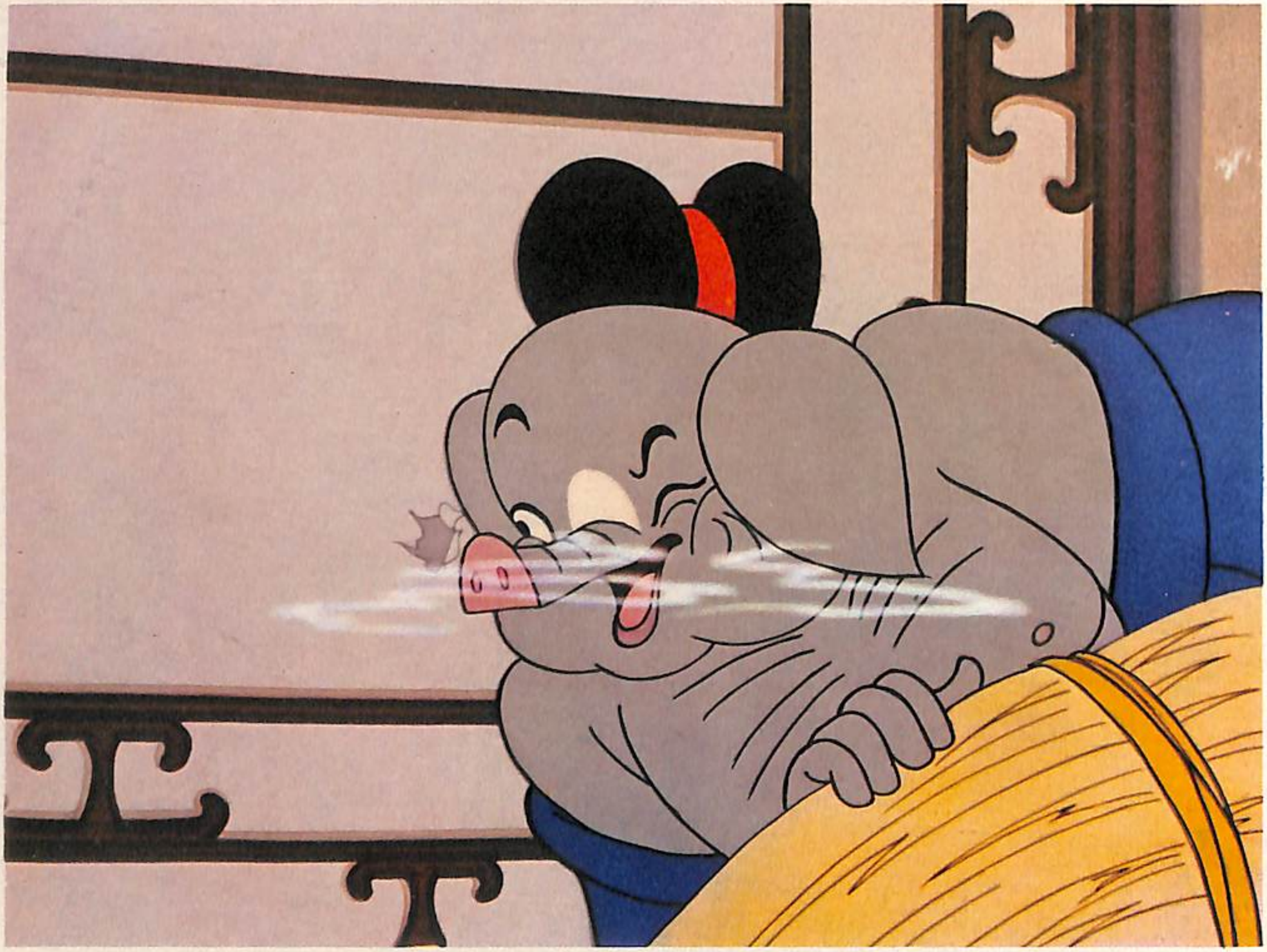
छिङ्फ़ङ और मिङ्य्वे जेड की एक रकाबी में रेशमी वस्त्र के ऊपर दो ताजे "रनशन" फल रखकर ले आए, जो देखने में शिशुओं जैसे प्रतीत होते थे। उन्होंने थाङसङ से उन फलों को खाने और उसके बाद आराम करने का अनुरोध किया।



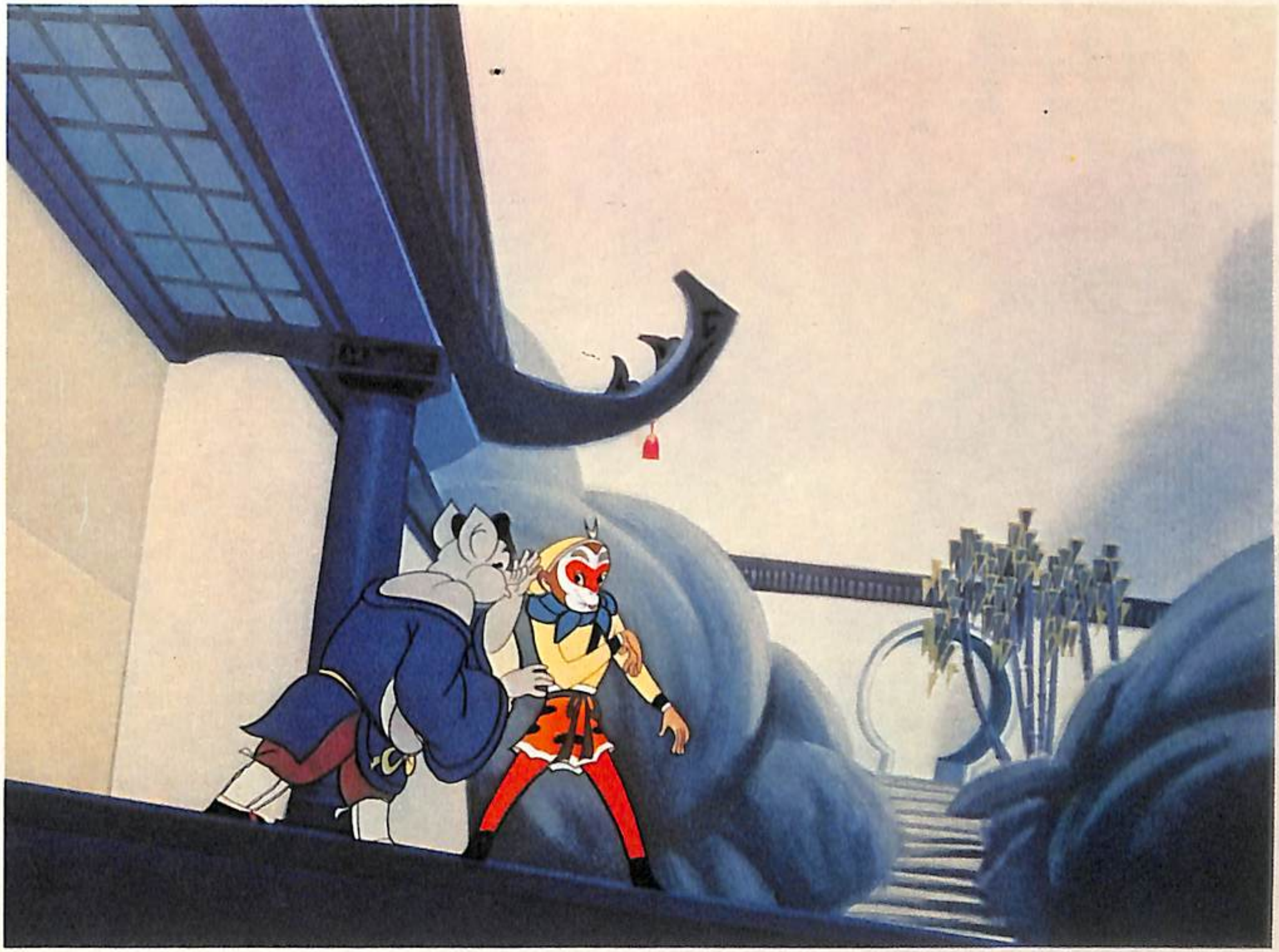
थाङ्सङ ने अपने हाथ हिलाते हुए उन फलों को खाने से इंकार कर दिया और कहा : "यह मंदिर एक पवित्र तीर्थ है और तुम लोग नरभक्षियों की तरह तीन दिन से भी छोटे शिशु कैसे खाने लगे हो ?"



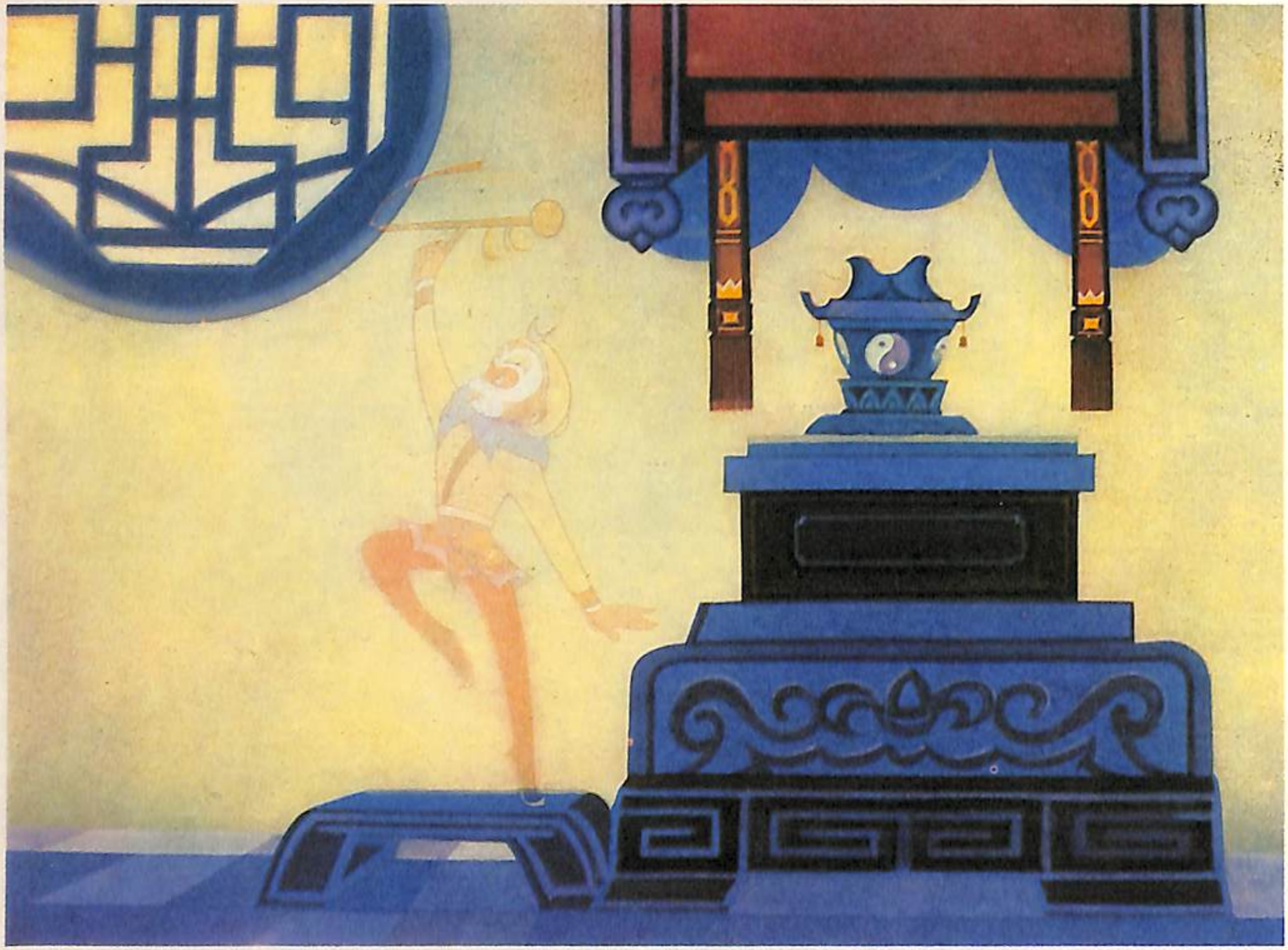
छिङफ़ङ और मिङय्वे आपस में बड़बड़ाने लगे : "ये भिक्षु तो इस मूल्यवान वस्तु का महत्व भी नहीं समझते। क्या इन्हें यह भी नहीं मालूम कि यह दिव्य फल जिस वृक्ष पर लगता है, वह दस हजार सालों में केवल तीस फल ही देता है। अगर कोई इसे सूंघ भर ले, तो वह ३६० साल तक जीवित रहता है और अगर उसे इस फल को खाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए, फिर तो उसकी उमर सैंतालीस हजार साल की हो जाती है।"



वृक्ष से तोड़े गए फलों को ज्यादा समय तक रखा नहीं जा सकता था, सो छिङफ़ङ और मिङय्वे ने आपस में सलाह करके उन्हें स्वयं खाने का निश्चय किया। इस वात की भनक थाङसङ के शिष्य चू पाच्ये को लग गई। जब दोनों बालक कमरे में वापस जाकर फल खाने लगे, उसने खिड़की पर लगे कागज में अपनी जीभ से एक छेद बना लिया और झांककर अन्दर देखने लगा। फलों की मोहक सुगन्ध से उसके मुंह में पानी भर आया।



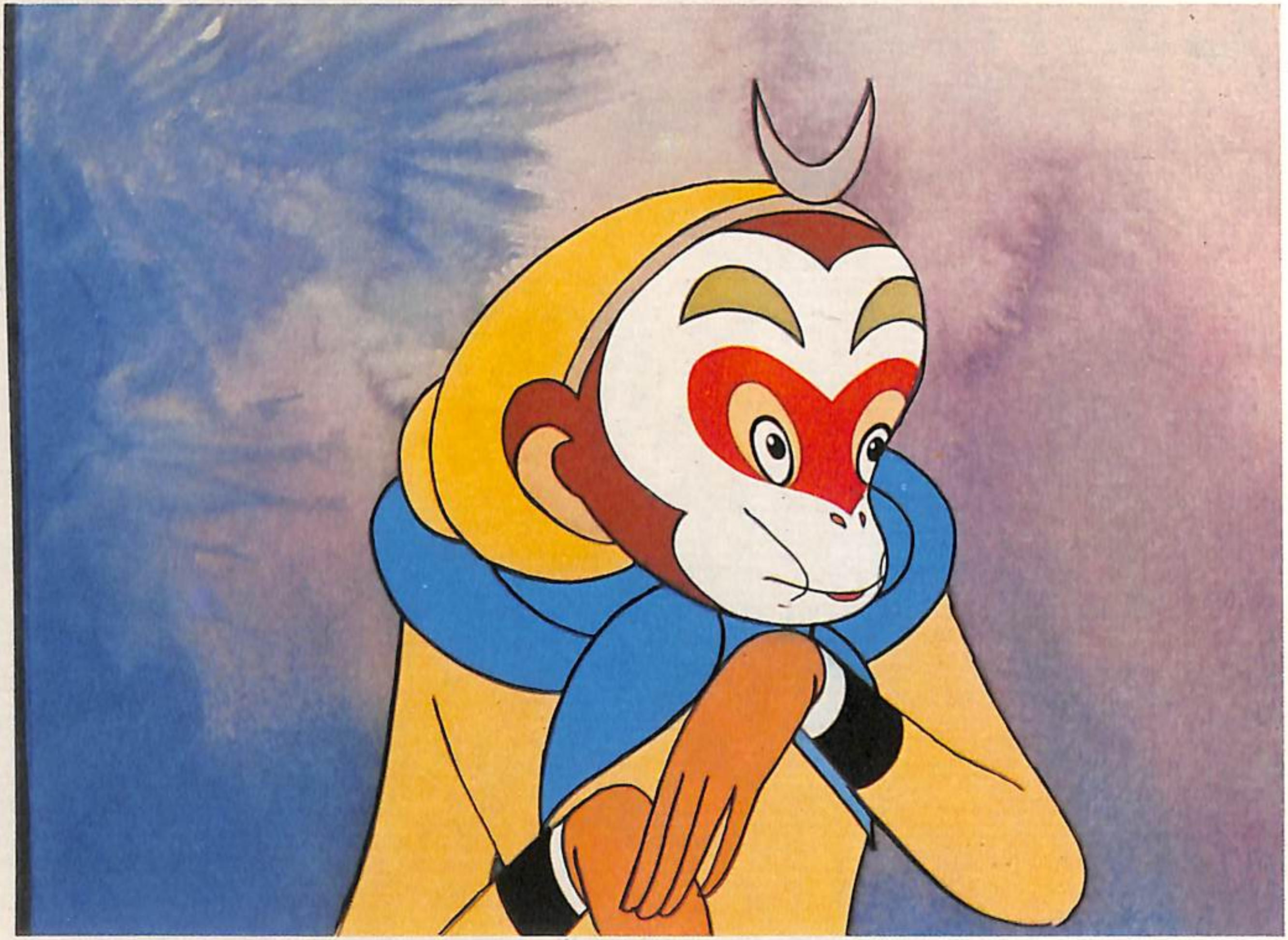
चू पाच्ये ने उन दिव्य फलों के बारे में वानरराज सुन ऊखुङ को बताया। उसकी बात सुनकर वह बोला : "यह सही है कि इस मूल्यवान फल से आदमी की उमर बहुत लम्बी हो जाती है, लेकिन हमने तो उसे देखा तक नहीं, खाने की बात तो दूर रही।" चू पाच्ये ने कहा : "क्यों न हम लोग कुछ फल चुराकर खा लें?" सुन ऊखुङ ने जवाब दिया : "ऐसा करना तो बहुत आसान है, सिर्फ उंगली उठाने की देर है।"



चू पाच्ये ने सुन ऊखुङ को बताया कि दिव्य फल को पेड़ से गिराने के लिए सोने के हथौड़े का इस्तेमाल किया जाता है। यह सुनकर सुन ऊखुङ मुड़कर चल दिया। वह स्वयं देखना चाहता था कि वास्तविक बात क्या है। उसने अदृश्य रूप धारण करके ताओ बालकों के कमरे में प्रवेश किया। दोनों बालक वहां नहीं थे। सुन ऊखुङ ने कमरे में खिड़की के पास सोने का एक हथौड़ा लटका देखा, जिसे लेकर वह वहां से चल दिया।



सुन ऊखुङ मकान के पीछे एक उद्यान के दरवाजे के पास पहुंचा और वह दरवाजा स्वयं खुल गया ।



वगीचे में ग्राड़ू के लाल-लाल फूलों ग्रौर हरे-हरे वैत वृक्षों की शोभा देखते ही बनती थी। सुन ऊखुङ इधर-उधर दिव्य वृक्ष की तलाश करने लगा।



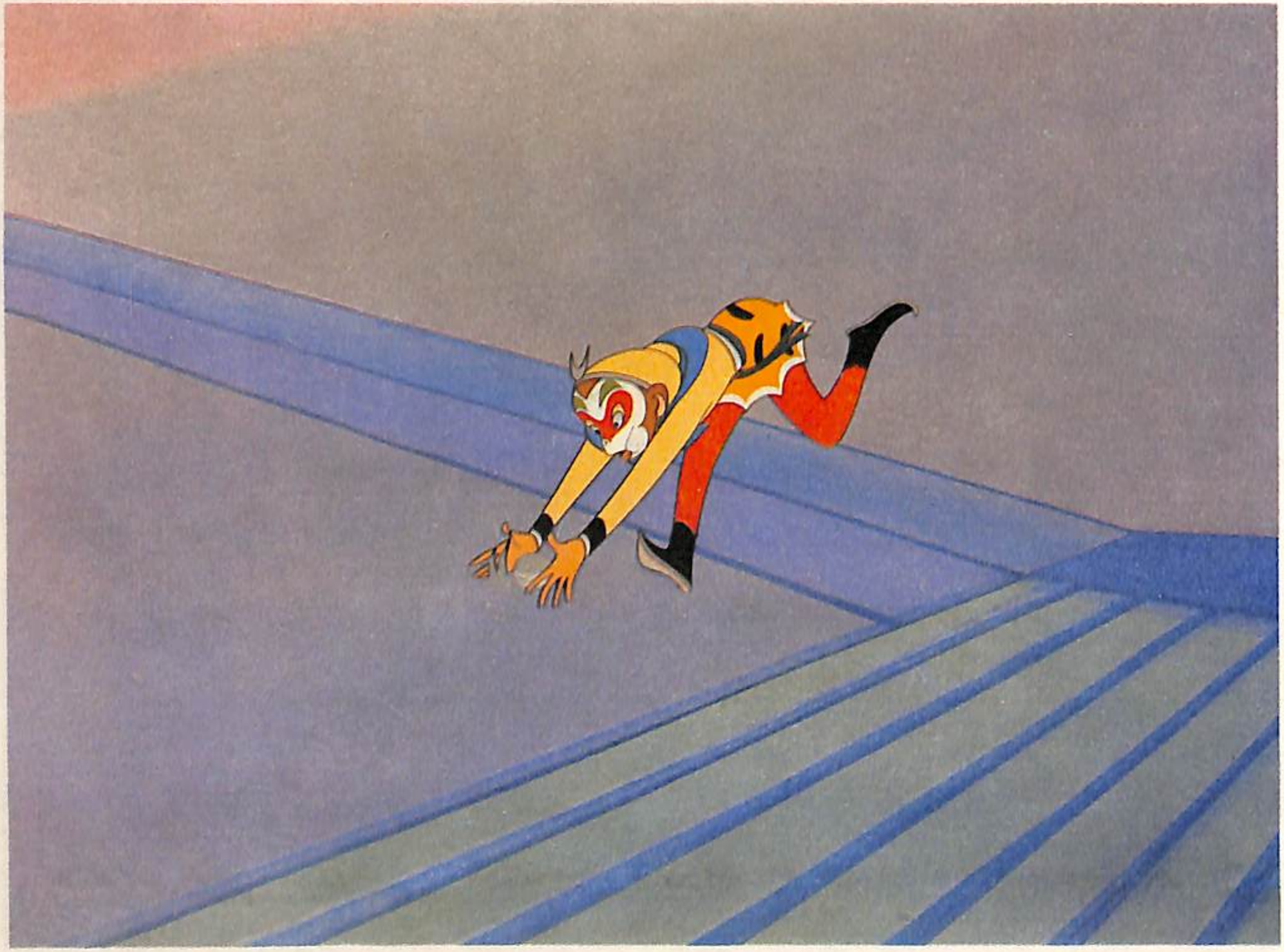
उद्यान की सुन्दरता बढ़ाने के लिए घनी झाड़ियों के बीच जगह-जगह नकली पहाड़ियां बनाई गई थीं। इसी तरह की एक पहाड़ी में सुन ऊखुङ को एक धुंधला-सा दरवाजा दिखाई दिया। उसने वहां जाकर उसकी गोल कल दबाई और दरवाजा धीरे-धीरे खुल गया।



सुन ऊखुङ ने दरवाजे से अन्दर प्रवेश किया और देखा कि बगीचे में एक बहुत ऊंचा पेड़ खड़ा है, जिसकी जड़ें टेढ़े-मेढ़े रूप में चारों ओर फैली हुई थीं। वह पेड़ बहुत घना तथा उसका फैलाव दसियों वर्गमीटर था ; उसकी पत्तियां इतनी चमकीली थीं कि उन्हें देखकर आंखें चौंधिया जाती थीं।



सुन ऊखुङ ने पेड़ की पत्तियों को एक जगह से हटाकर देखा कि उनके बीच एक बड़ा-सा फल डाली से लटका हुआ किसी शिशु की तरह हिलडुल रहा है। उसकी लुभावनी सुगन्ध से वह आनन्दित हो उठा।



सुन ऊखुङ ने सोने के हथौड़े से पेड़ की डाली पर जोर मे प्रहार किया और वह फल धप की आवाज के साथ जमीन पर आ गिरा। लेकिन उसने ज्यों ही उसे उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, त्यों ही वह गायब हो गया। इससे सुन ऊखुङ हैरानी में पड़ गया।



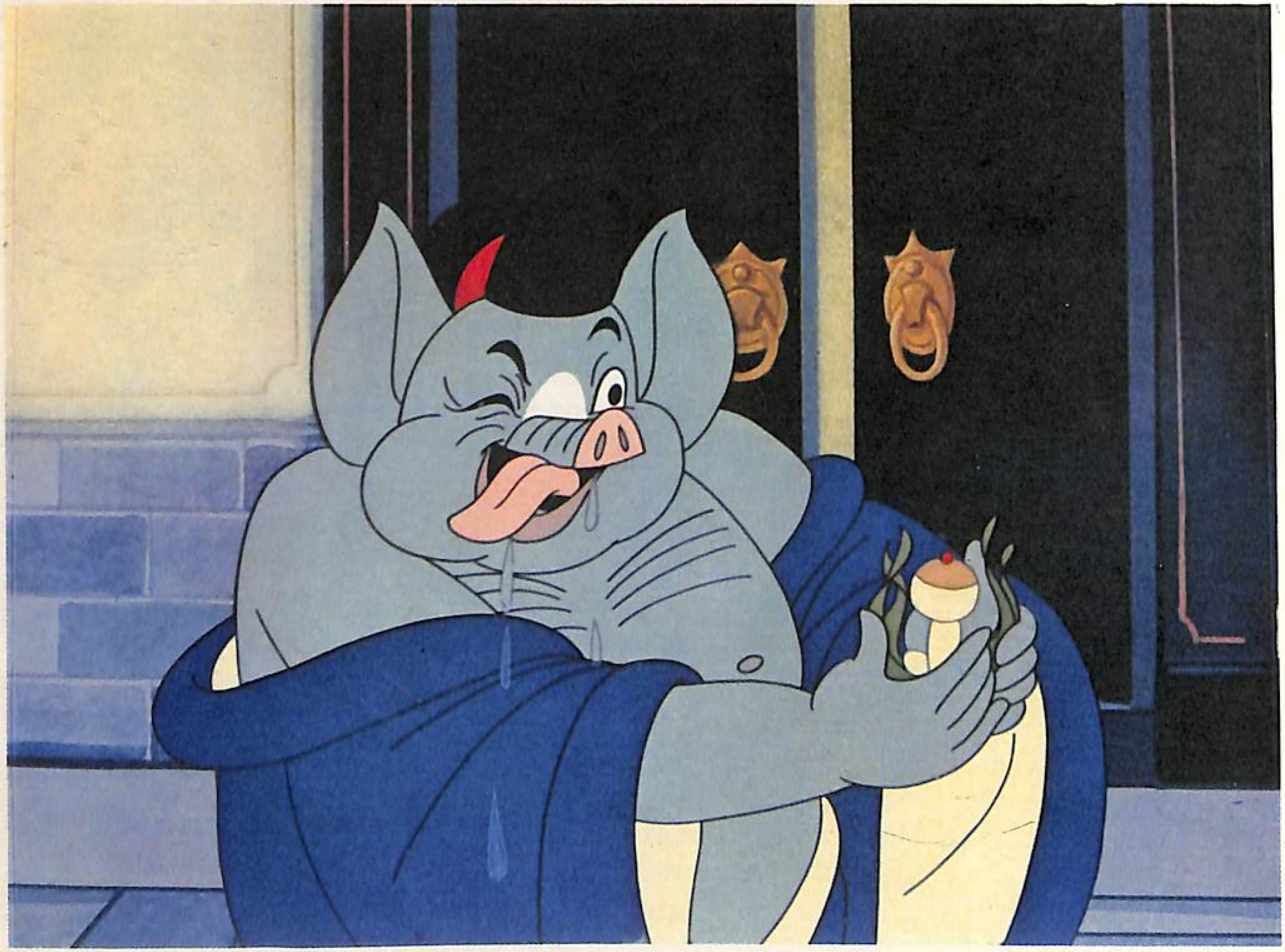
तव सुन ऊखुङ ने मंत्र पढ़कर उद्यान के भूदेवता को बुलाया ग्रौर उनसे फल के गायव हो जाने का कारण पूछा। उन्होंने उसे वताया : "यह दिव्य फल एक ऐसी वस्तु है जो सोने के सम्पर्क में ग्राते ही पेड़ से गिर जाती है ; लकड़ी से मिलने पर सूख जाती है ; पानी से मिलने पर पिघल जाती है ; ग्राग के सम्पर्क में ग्राने से झुलस जाती है ग्रौर भूमि का स्पर्श करते ही उसके ग्रन्दर समा जाती है।"



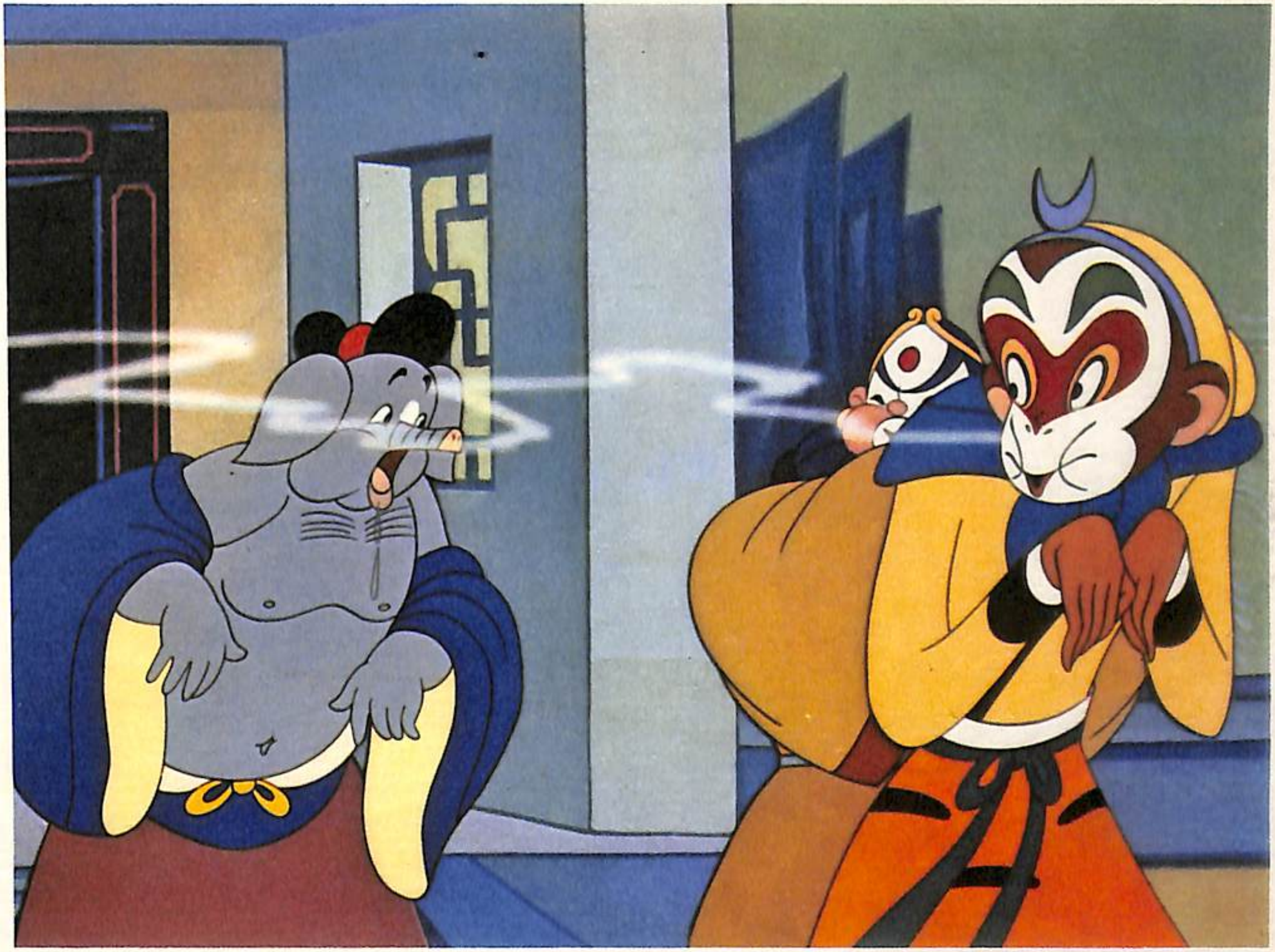
सुन ऊखुङ दूसरा फल पाने के लिए पेड़ की डालियों के बीच उछल-कूद करता रहा। अन्त में उसने भूदेवता के कथनानुसार पेड़ की एक डाल पर सोने के हथौड़े से प्रहार किया और तीन फलों के जमीन पर गिरने से पहले ही उन्हें अपने हाथों में ले लिया।



फिर वह उन फलों को लेकर चू पाच्ये और थाङसङ के तीसरे शिष्य शासङ के पास गया, ताकि वे तीनों उन्हें आपस में बांटकर खा लें।



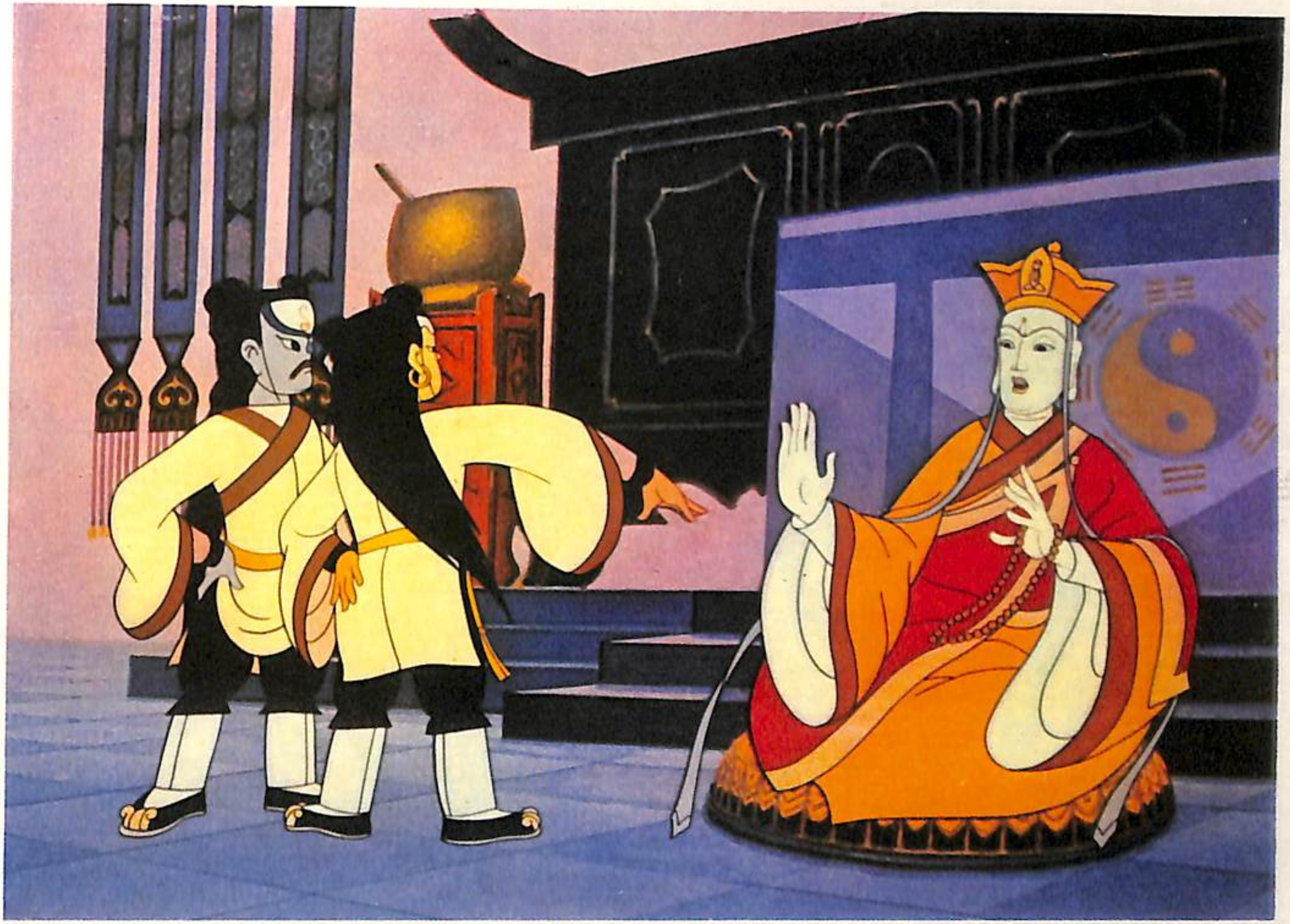
उसी समय चू पाच्ये ने औरों से एक कदम आगे बढ़कर एक फल उठा लिया और उसे मुंह में डालकर समूचा ही निगल लिया।



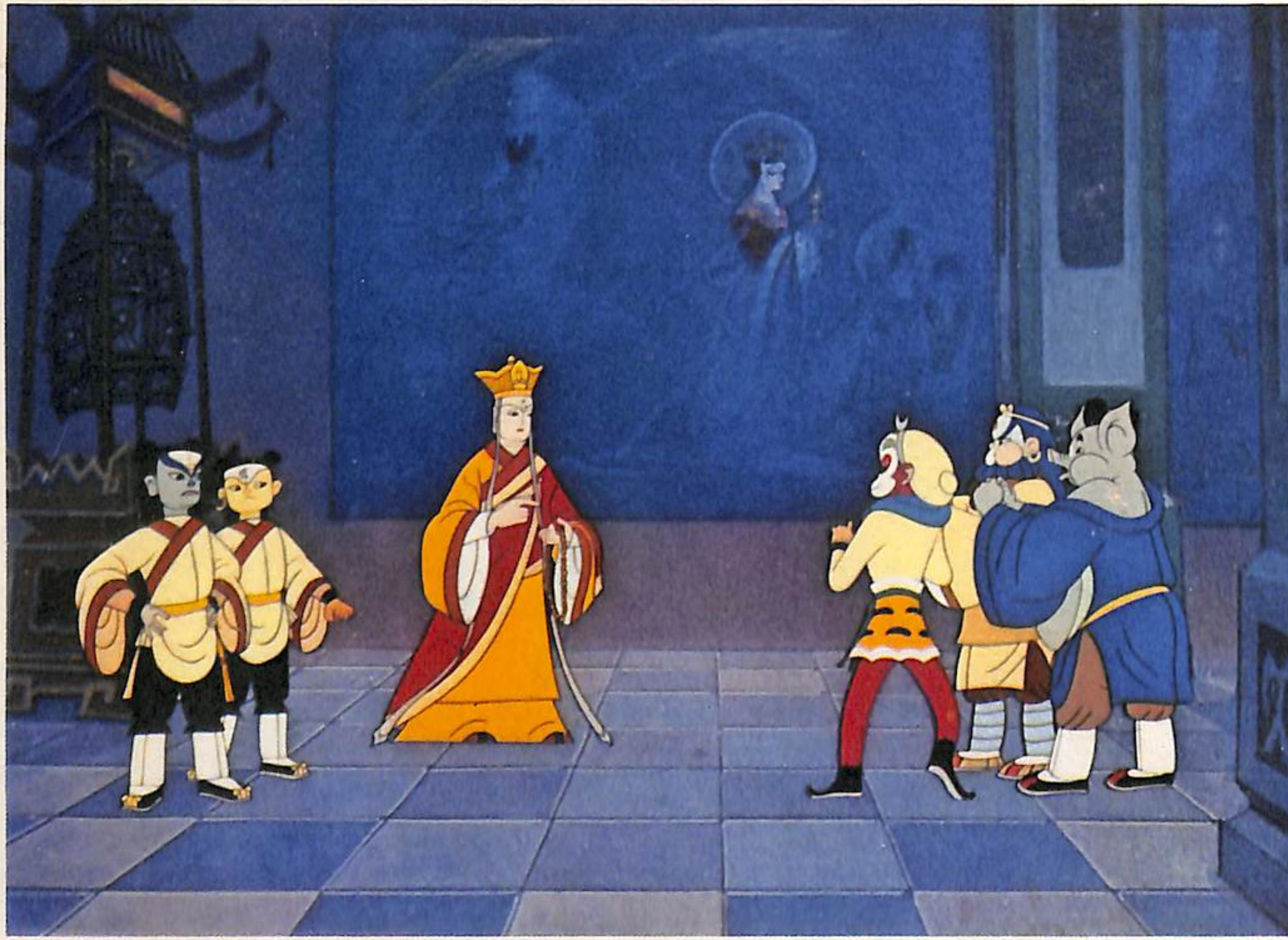
फल को समूचा निगल जाने के कारण चू पाच्ये को न तो उसका स्वाद पता चला, न उसका मन ही भरा। इसलिए उसने सुन ऊखुङ को अपने लिए एक और फल लाने को कहा। सुन ऊखुङ ने कहा : "इस दिव्य वृक्ष पर दस हजार सालों में केवल तीस फल लगते हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हम तीनों इस तरह का एक-एक फल खा चुके हैं। आखिर तुम्हें इतने से सन्तोष क्यों नहीं है?"



"वापस लौट जा !" यह कहते हुए सुन ऊखुङ ने सोने का हथौड़ा दूर फेंक दिया। उसी समय ताओ बालक छिङफ़ङ और मिङय्वे वहां आ पहुंचे और उन्हें मालूम हुआ कि उन तीनों ने लम्बी उमर देने वाले फल चोरी से खा लिए हैं।



ताओ बालकों को उनकी यह हरकत बहुत बुरी लगी, इसलिए वे थाङसङ के पास गए और उनसे सुन ऊखुङ की शिकायत की ।



थाङसङ ने अपने शिष्यों को बुलाया और डांटकर पूछा : "तुम तीनों में से किसने लम्बी उमर देने वाला दिव्य फल चुराकर खाया है ?" सुन ऊखुङ ने अपने हाथ जोड़कर थाङसङ को बताया कि उसी ने तीन फल पेड़ से गिराए थे और खाने के लिए सब को बांट दिए थे ।



छिङफ़ङ ने सुन ऊखुङ की बात सुनकर कहा : "तुम ने चार फलों की चोरी की है, फिर यह क्यों कहते हो कि केवल तीन ही खाए हैं ?"



मिङ्ग्वे ने थाङसङ को धिक्कारते हुए कहा : "हमने तुम्हारा सौहार्दपूर्ण स्वागत-सत्कार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, और तुम लोग हमारी ही चीज चुराकर खा गए ! ऊपर से अपनी चोरी भी कबूल नहीं करते हो ! दरअसल, तुम लोग साधुओं के वेश में चोर हो, चोर !" यह सुनकर सुन ऊखुङ का पारा चढ़ गया ।



उसने चुपके से अपने शरीर का एक बाल उखाड़ लिया और उस पर जोर से फूंक मारी। ऐसा करते ही उसके दो शरीर हो गए – एक असली और दूसरा नकली। नकली शरीर कमरे में ही बना रहा, जबकि असली शरीर वहां से उड़कर पीछे उद्यान में उस दिव्य वृक्ष के नीचे पहुंच गया।



सुन ऊखुङ ने अपना स्वर्णमंडित लौहदण्ड निकाला और वड़े रोष के साथ दिव्य वृक्ष पर प्रहार करना शुरू कर दिया। प्रहार करते समय वह गुस्से से वड़वड़ाता भी जा रहा था : "इस वीरान और गरीव इलाके में रहने वाले तुम असभ्य लोगों ने हमारे लिए गंवारू भाषा का प्रयोग किया है और हम पर लांछन लगाए हैं। जरा ठहरो, तुम्हें अभी मेरे तेज का पता चल जाएगा!"



सुन ऊखुङ ने अपने स्वर्णमंडित लौहदण्ड से पेड़ की एक मोटी डाल तोड़ डाली और फिर पहाड़ों को गिराने वाली अपनी दैवी शक्ति का प्रयोग करके उस समूचे वृक्ष को जड़सहित उखाड़कर जमीन पर गिरा दिया ।



सुन ऊखुङ अपना गुस्सा उतारने के बाद वहां से जाने ही वाला था कि उसका सामना दोनों ताओ बालकों से हो गया। छिङफ़ङ ने उसे फटकारा : "चोर भिक्षुओ, तुम सब बड़े ही निर्लज्ज और दुस्साहसी हो। देख लेना, मेरे गुरु जी तुम्हें हरगिज माफ नहीं करेंगे!"



यह सुनकर सुन ऊखुङ ने अपने शरीर के अनेक बाल उखाड़े और फूंक मारकर कहा : "बदल जाओ !" अचानक नींद लाने वाले अनगिनत कीड़े छिङफ़ङ और मिङय्वे की ओर उड़ने लगे ।



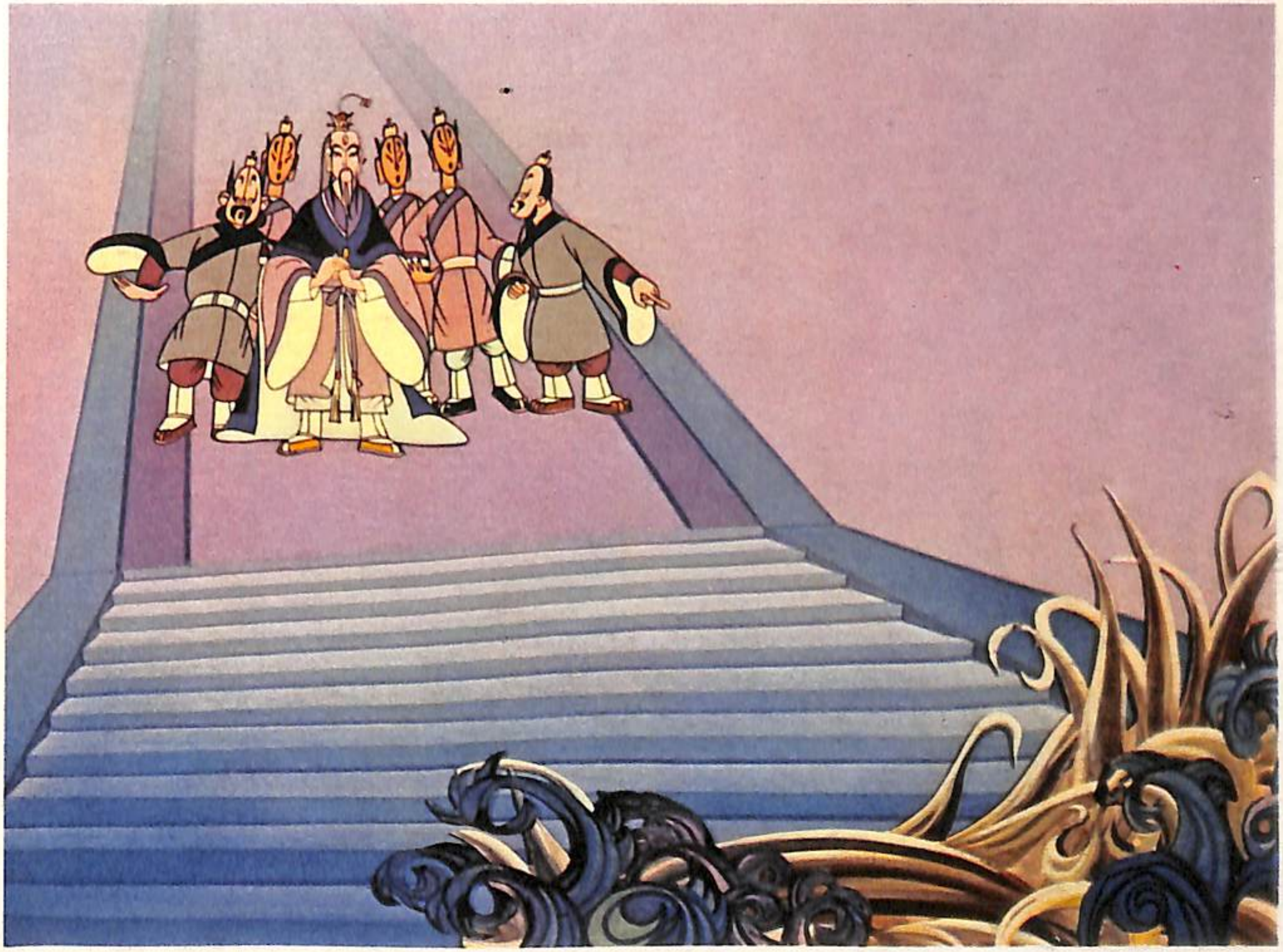
उन कीड़ों के असर से छिङफ़ङ और मिङय्वे को जंभाइयां आने लगीं और कुछ ही पलों में दोनों जमीन पर लुढ़ककर खर्राटे भरने लगे। सुन ऊखुङ ने कहा : "अब तुम दोनों खूब सोओ, पूरे एक महीने तक सोते रहो!" जब तुम अपनी लम्बी नींद से जागोगे, तब तक हम यहां से बहुत दूर जा चुके होंगे।"



रात हो गई थी। थाङसङ और उनके शिष्य ऊच्वाङ मंदिर को छोड़कर चांद की रोशनी में अपना आगे का सफर तय करने लगे। रास्ते में चलते-चलते थाङसङ ने सुन ऊखुङ को कड़ी फटकार बताई : "शरारती वानर, अगर तूने फिर कोई मुसीबत खड़ी की, तो मैं तुझे हरगिज माफ नहीं करूंगा।"



अगले दिन सुबह महर्षि चनय्वान वापस लौट आए और अपने शिष्यों के साथ मंदिर के वृहद भवन के सामने पहुंचे। उन्होंने छिङफ़ङ और मिङय्वे का नाम लेकर कई बार पुकारा, लेकिन उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला। इससे उनके मन में आशंका पैदा हो गई।



महर्षि चनय्वान दोनों बालकों को खोजते-खोजते पीछे के उद्यान में जा पहुंचे। उन्होंने देखा कि दिव्य वृक्ष गिरा पड़ा है, तथा उस पर एक भी फल बाकी नहीं बचा है। यह देखकर महर्षि चनय्वान को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी समय उन्हें दूर से किसी के खर्राटे भरने की आवाज भी सुनाई पड़ी। उन्होंने वहां जाकर देखा कि छिङफ़ङ और मिङय्वे जमीन पर पड़े हुए गहरी नींद में सो रहे हैं।



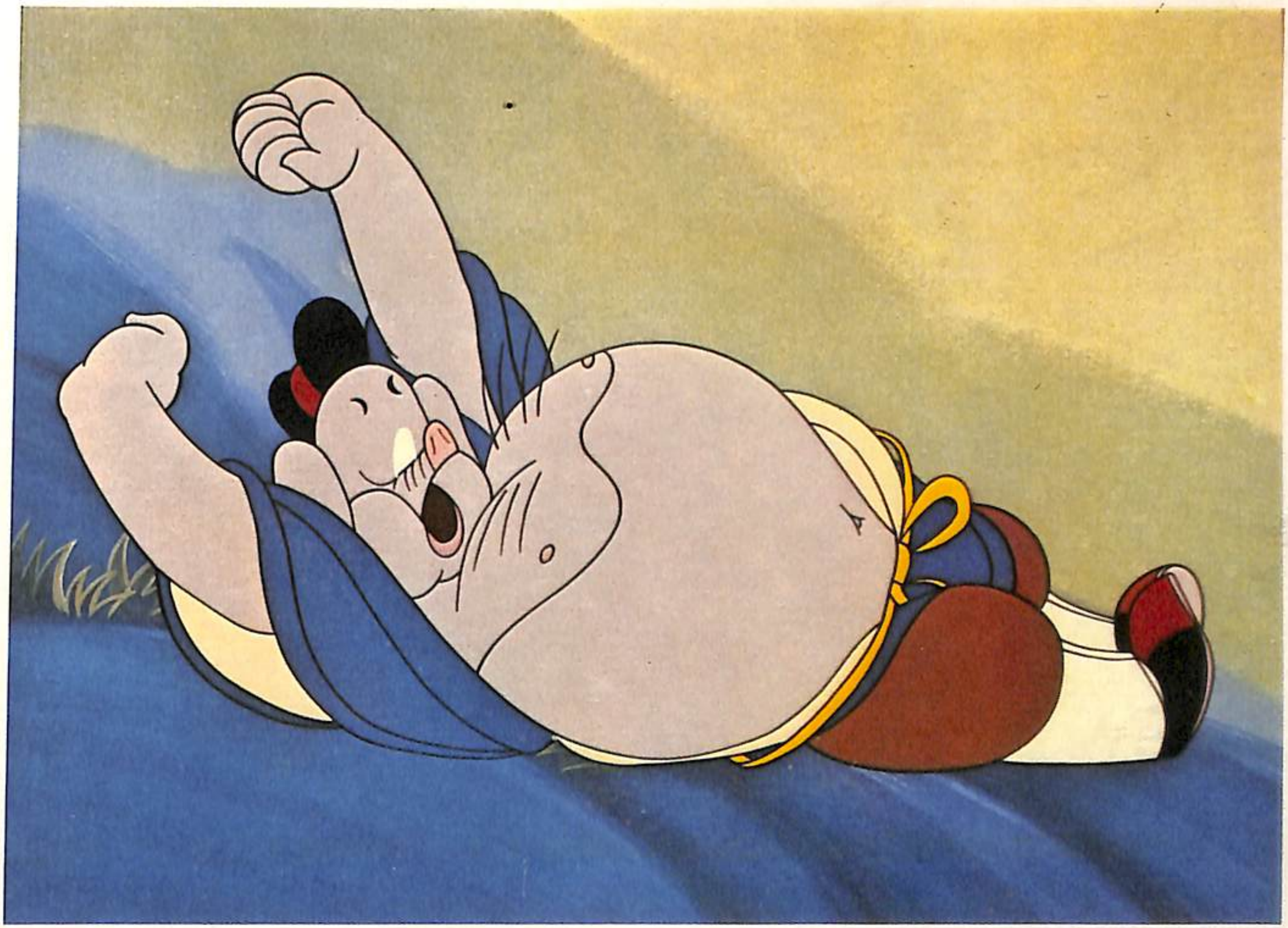
महर्षि चनय्वान ने मंत्र पढ़कर छिङफ़ङ ग्रौर मिङय्वे के शरीर पर थोड़ा-सा पानी छिड़का, जिससे वे दोनों जाग उठे। दोनों बालकों ने महर्षि चनय्वान को रोते-रोते सारी घटना बताई, जिसे सुनकर वे खिलखिला पड़े ग्रौर बोले : "ग्रच्छा, तो यह सारी करामात वानरराज सुन ऊखुङ की है। यह वही सुन ऊखुङ है जिसने पांच सौ साल पहले देवलोक में हाहाकार मचा दिया था। उसकी ग्रद्भुत दैवी शक्ति की कोई तुलना नहीं है।"



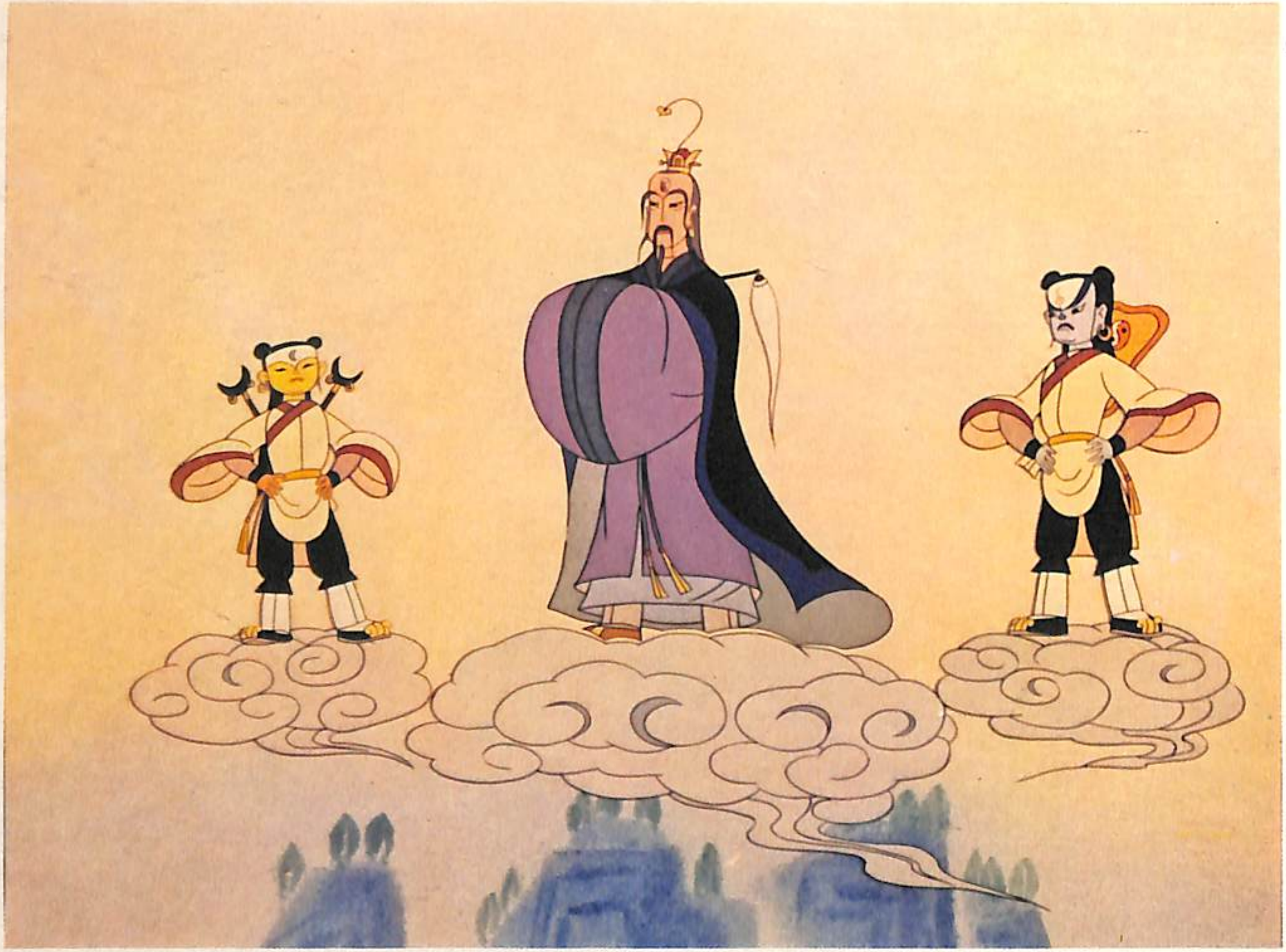
महर्षि चनय्वान और दोनों बालक छिङफ़ङ व मिङय्वे सफेद बादलों पर सवार होकर वानरराज सुन ऊखुङ का पीछा करने लगे।



उधर थाङसङ और उनके तीनों शिष्य रातभर चलते-चलते बहुत थक गए थे, इसलिए वे एक बड़े-से बरगद के पेड़ के नीचे आराम करने लगे। थाङसङ पेड़ का सहारा लेकर बैठ गए; शासङ अपनी वहंगी जमीन पर रखकर झपकियां लेने लगा, चू पाच्ये जमीन पर चित लेट गया तथा सुन ऊखुङ घोड़े को पानी पिलाने नदी किनारे ले गया। वह इस समय बिलकुल शान्त दिखाई दे रहा था।



दिन निकल ग्राया था। चू पाच्ये को भूख सता रही थी। वह लेटे-लेटे अंगड़ाइयां ले रहा था कि अचानक उसे एक सफेद बादल दूर से उड़ता हुआ अपने निकट आता दिखाई दिया। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा और चिल्लाया : "गजब हो गया, ऊच्वाङ मंदिर के स्वामी महर्षि चनंय्वान हमारा पीछा करते इधर ही आ रहे हैं!"



महर्षि चनय्वान ने बादलों के ऊपर से ही अपने हाथ जोड़कर थाङसङ और उनके शिष्यों से पूछा : "भिक्षुओ, क्या आप लोग वानशओशान पर्वत के ऊच्वाङ मन्दिर से होते हुए यहां आए हैं ?" जवाब में सुन ऊखुङ इंकार करने ही वाला था कि महर्षि चनय्वान व्यंग्य से हंसकर बोले : "उत्पाती वानर, तू मुझे ही धोखा देना चाहता है ! यह असम्भव है !"



सुन ऊखुङ इस अपमान से गुस्सा हो गया। वह उछलकर रंगीन बादलों पर जा पहुंचा और अपने स्वर्णमंडित लौहदंड से महर्षि चनय्वान पर प्रहार करने लगा।



महर्षि चनय्वान ने शांत भाव से अपना चंवर हिलाते हुए उसका प्रतिरोध किया। तब चू पाच्ये और शासङ भी सुन ऊखुङ की मदद के लिए आकाश में जा पहुंचे।



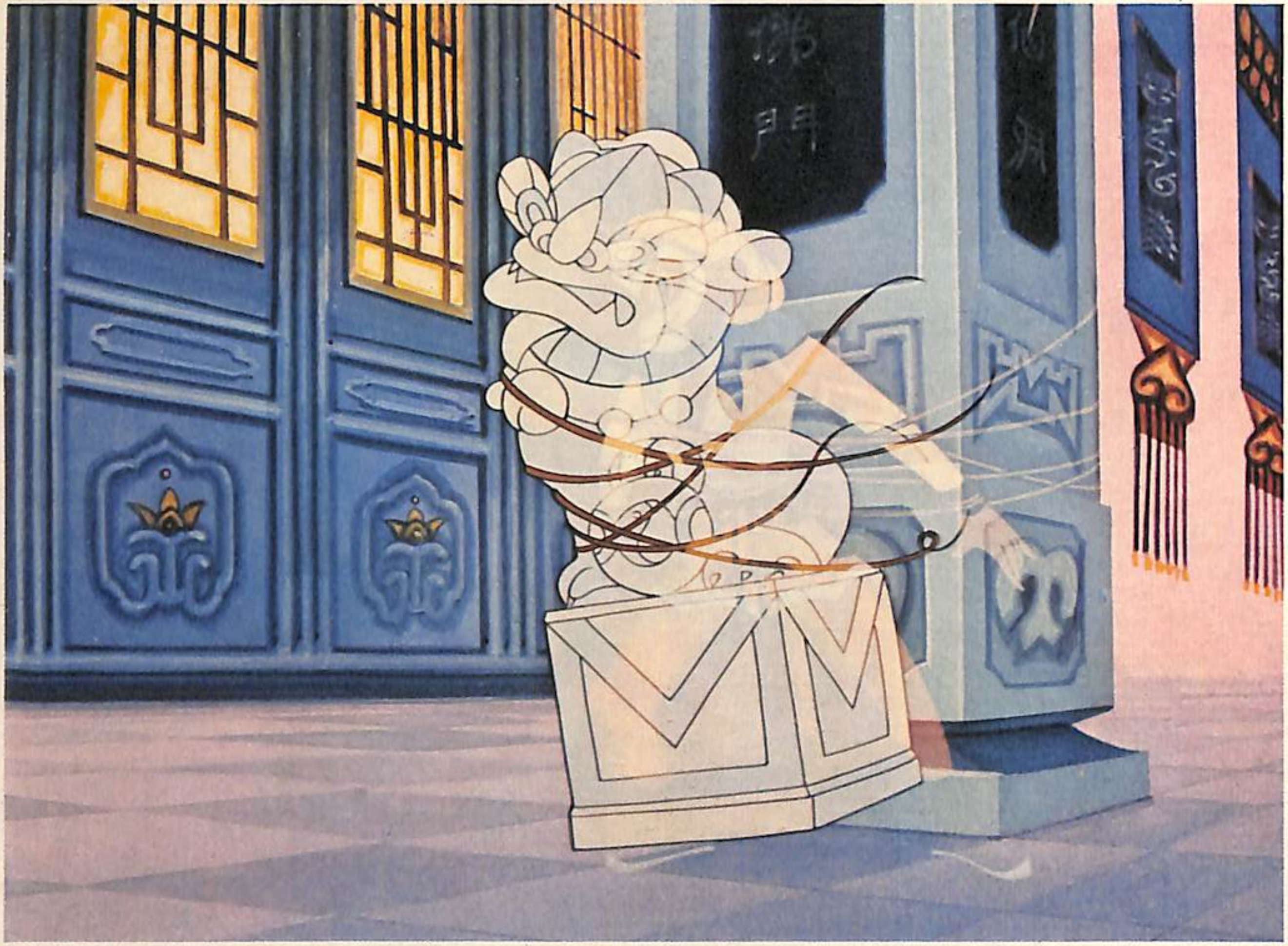
अपने गुरु थाङसङ के मना करने के बावजूद सुन ऊखुङ ने अपने हाथ में स्वर्णमंडित लौहदंड, चू पाच्ये ने पांचा और शासङ ने लाठी लेकर महर्षि चनय्वान को घेर लिया और उनसे लड़ना शुरू कर दिया। दोनों पक्षों में काफी देर तक लड़ाई चलती रही, लेकिन अनेक प्रहारों व जवाबी प्रहारों के बाद भी हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।



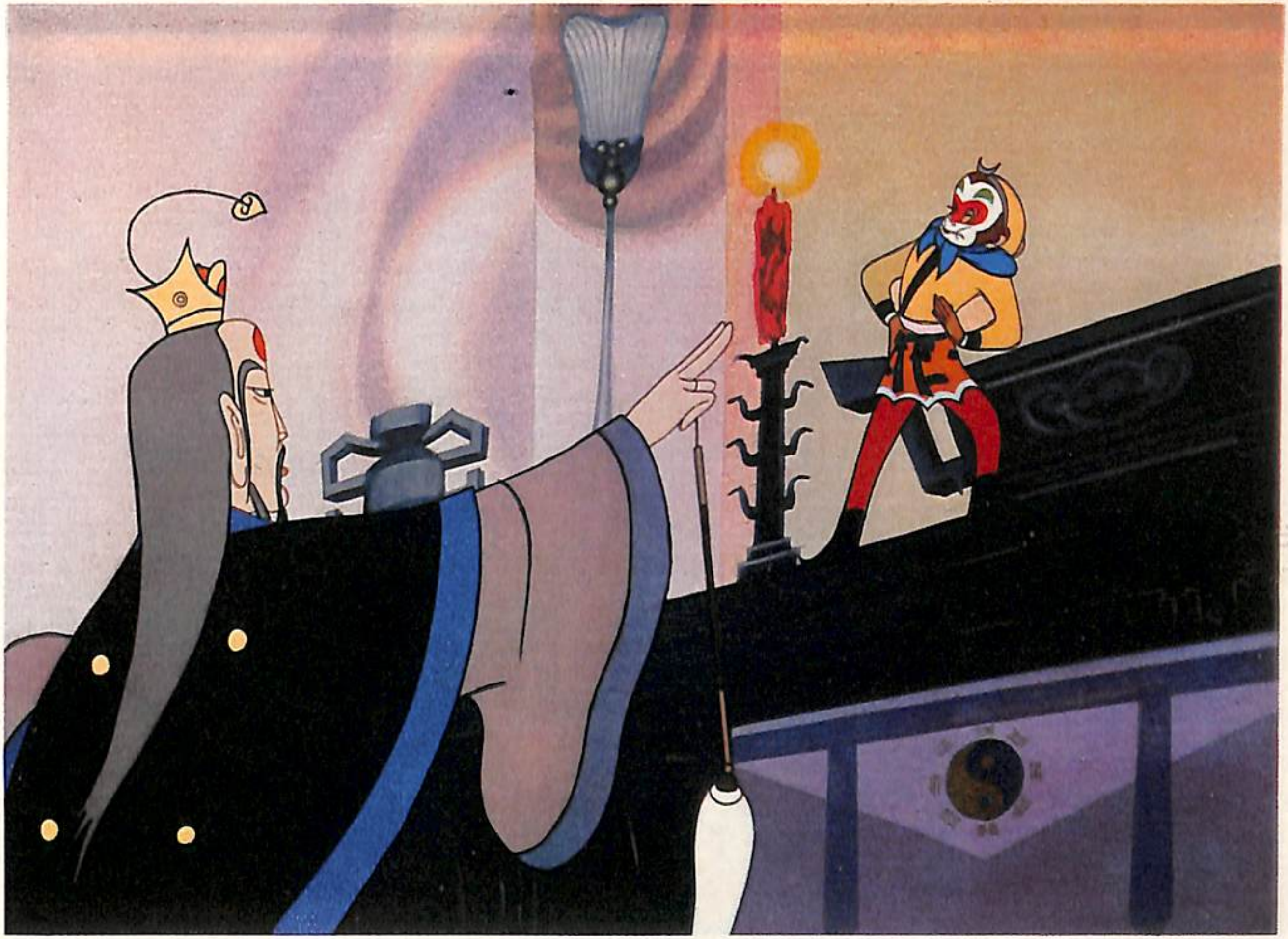
अन्त में महर्षि चनव्यान उनके घेरे से बाहर निकल आए और उन्होंने अपने विपक्षियों को पकड़ने के लिए "आस्तीन जाल" वाली युक्ति अपनाई। जैसे ही उन्होंने अपने चोगे की आस्तीन हवा में लहराई, आकाश में सुनहरी रोशनी छा गई। फिर उन्होंने आस्तीन को फैलाकर भिक्षु थाङसङ तथा उनके तीनों शिष्यों को उसमें समेट लिया। अन्त में वे उन्हें बन्दी बनाकर ऊच्वाङ मन्दिर में ले आए।



मंदिर के बृहद भवन में थाङसङ और उनके तीनों शिष्यों को रस्सी से बांध दिया गया। फिर महर्षि चनय्वान ने ताम्रो बालकों को सात सितारों वाला चाबुक लाने और उससे थाङसङ की पिटाई करने का आदेश दिया। तभी सुन ऊखुङ बोल पड़ा : "फलों की चोरी मैंने की थी, मैंने ही उन्हें खाया था और दिव्य वृक्ष भी मैंने ही गिराया था। इसलिए सजा मुझे मिलनी चाहिए। आप मेरे गुरु को छोड़ दें।"



महर्षि चनय्वान सुन ऊखुङ के उक्त कथन से बड़े प्रभावित हुए, लेकिन मुंह से कुछ नहीं बोले वल्कि मन ही मन कहने लगे : "यह तो सचमुच एक ईमानदार और सत्यनिष्ठ व्यक्ति है।" उधर सुन ऊखुङ जादू से उस स्थान से गायब हो गया जहां वह बंधा हुआ था और उसके स्थान पर पत्थर का एक शेर खम्भे से बंध गया। लेकिन अन्य लोग जादू के असर से इस बात को समझ नहीं सके और पत्थर के शेर पर ही चाबुक बरसाने लगे।



असली सुन ऊखुङ धूपदान की मेज पर उछल-कूद करता हुआ पत्थर के शेर को पिटते देखता रहा। महर्षि चनय्वान फौरन समझ गए कि सुन ऊखुङ ने जादू कर दिया है और इसीलिए उसे पिटाई का जरा भी दर्द महसूस नहीं हुआ है। उसकी इस हरकत से उन्हें गुस्सा आ गया और वे बोले कि भगवान बुद्ध से न्याय करवाने और दिव्य वृक्ष पुनः प्राप्त करने के लिए सुन ऊखुङ को उनके साथ भारत जाना होगा।



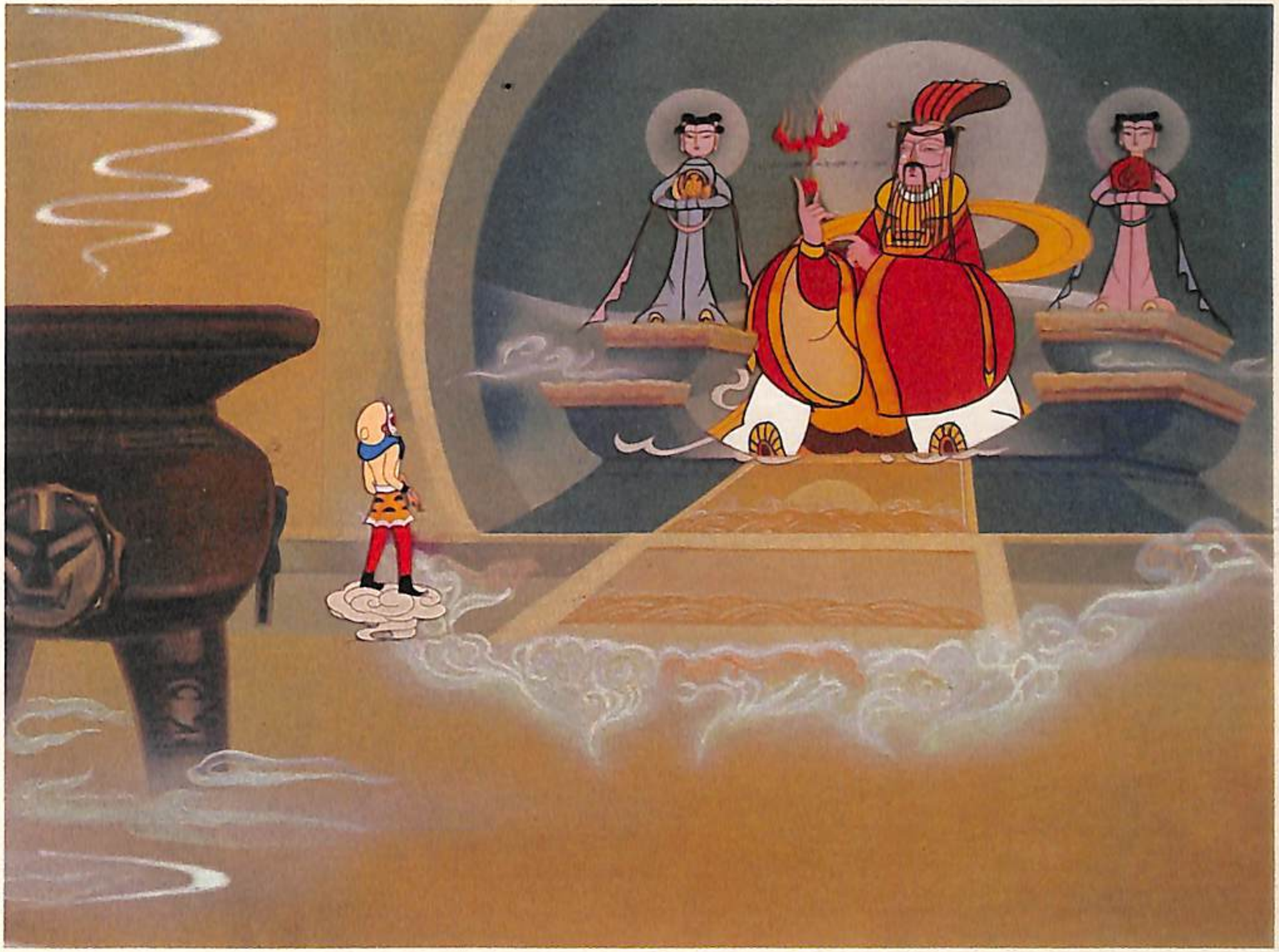
लेकिन सुन ऊखुङ जानता था कि गलती उसी की है, इसलिए उसने महर्षि से अपने गुरु को छोड़ देने की पुन: विनती की और यह वादा भी किया कि वह पूर्वी समुद्र के तीन दैवी द्वीपों – फङलाए, फूथो और इङचञो – पर जाकर दिव्य वृक्ष को पुनर्जीवित करने की संजीवनी बूटी तलाश करके लाएगा। इस बात से महर्षि का गुस्सा शान्त हो गया और वे बोले : "अगर सचमुच ऐसा हो जाए, तो हम दोनों के संबंध भाइयों जैसे हो जाएंगे।"



सुन ऊखुङ जमीन से उछलकर एकदम वादल पर जा पहुंचा और फिर वहां से कलाबाजी खाता हुआ विजली की गति से फङलाए द्वीप की श्वेत वादल गुफा में पहुंच गया। वहां उसने हाथ जोड़कर गुफा के तीन देवताओं – फ़ू, लू और शओ को प्रणाम किया तथा दिव्य वृक्ष को वचाने में उनसे मदद मांगी।



उन देवताओं ने कहा : "वानरराज, क्या आप नहीं जानते कि यह वृक्ष, जिसे आपने गिरा दिया है, सभी दिव्य वृक्षों की जड़ है ? उसे कैसे पुनर्जीवित किया जाए यह तो हमें भी नहीं मालूम ।" सुन ऊखुङ ने जब यह सुना, तो वह उछलकर पुनः बादल पर सवार हो गया और वहां से चल दिया ।



फिर वह फ़ाङ्चाङ देवपर्वत पर पहुंचा, जहां उसने सम्राट तुङ्ह्वा से मुलाकात करके दिव्य वृक्ष को फिर से जिन्दा करने की कोई अचूक दवा मांगी। सम्राट ने कहा: "मेरे पास तो केवल स्वर्ण जीवनवटी है, जिससे सांसारिक प्राणियों का इलाज किया जा सकता है, दैवी वृक्षों का नहीं।" इस पर सुन ऊखुङ ने कहा: "यदि ऐसा है तो मैं जा रहा हूं।" वह बादल पर सवार होकर इङ्चयो द्वीप की ओर चल दिया।



इसके वाद सुन ऊखुङ इङचग्रो द्वीप पर पहुंचा ग्रौर वहां रहने वाले नौ वयोवृद्ध देवताग्रों से ग्रादरपूर्वक भेंट करके उनसे उस पेड़ को बचाने का कोई कारगर उपाय पूछा। लेकिन वे भी उसकी कोई मदद नहीं कर सके। सुन ऊखुङ ने उनसे भी विदा ली ग्रौर वादल पर सवार होकर वहां से ग्रौर ग्रागे प्रस्थान कर दिया।



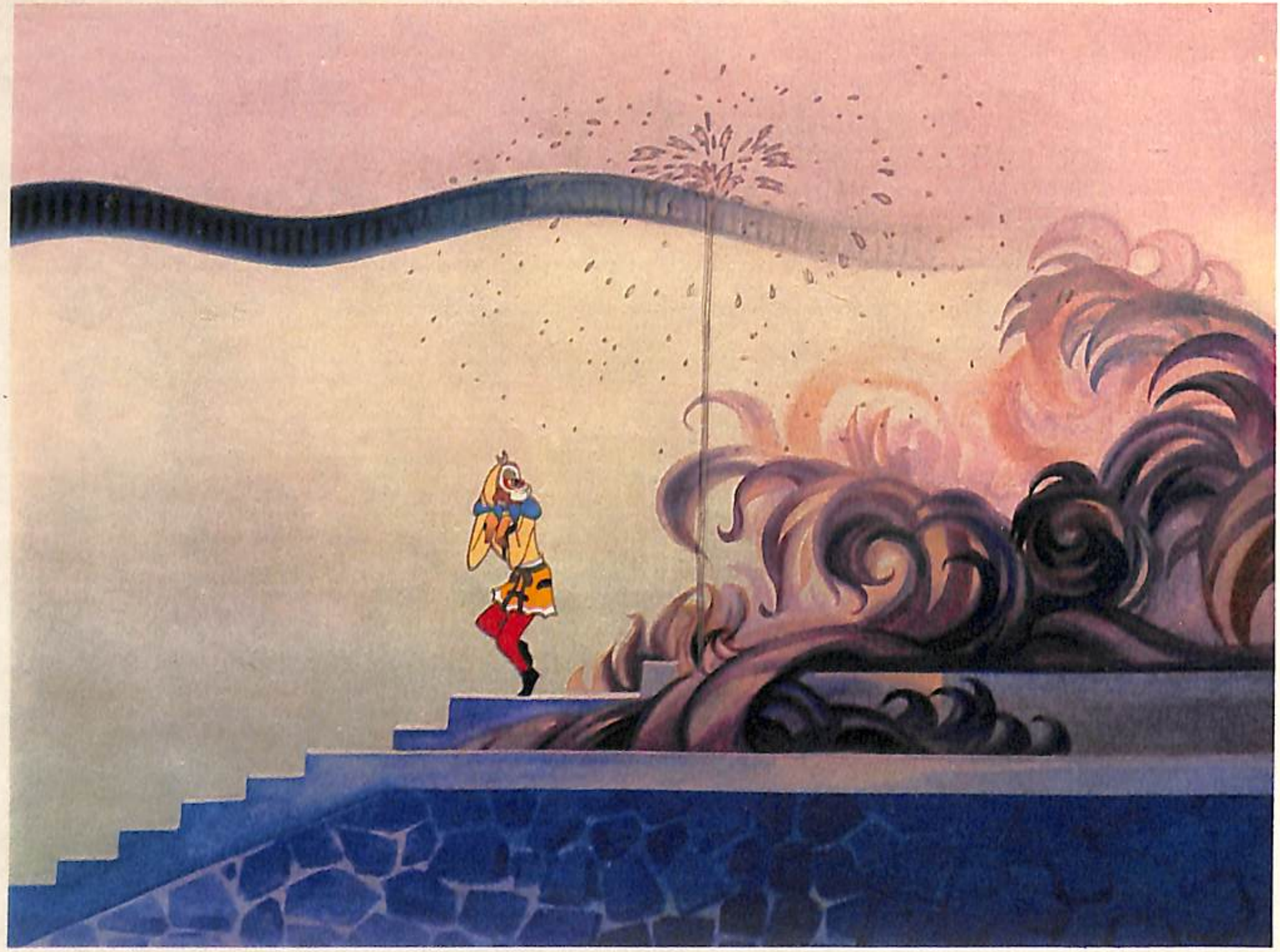
वह पूर्वी समुद्र को पार करता हुआ फूथो द्वीप पर पहुंचा। वहां उसने दक्षिणी समुद्र की क्वानइन नामक देवी के दर्शन किए। वे कमल के तालाब में कमल के आकार के सिंहासन पर बैठी हुई थीं। सुन ऊखुङ ने उन्हें सारी घटना बताई और उनसे विनती की कि वे उसे कोई दिव्य औषधि देकर उस पेड़ को बचा लें, ताकि उसके गुरु थाङसङ अपनी यात्रा फिर शुरू कर सकें।



लेकिन देवी क्वानइन ने उसकी भर्त्सना करते हुए कहा : "दुस्साहसी वानर, तुम कुतर्की और नादान हो ! लम्बी उमर देने वाले 'रनशन' फल से ही पृथ्वी और आकाश की उत्पत्ति हुई है । महर्षि चनय्वान ही भूदेवताओं के पूर्वज हैं और खुद्र मुझे भी उनके सामने झुकना पड़ता है ।"



तव सुन ऊखुङ ने सच्चे दिल से अपनी गलती मान ली और देवी क्वानइन से क्षमा-याचना की। उन्होंने हाथ में एक दिव्य बोतल लेकर उससे कहा : "इस बोतल में अमृत है। इसके प्रयोग से दिव्य वृक्ष को नया जीवन मिल सकता है।" उन्होंने अमृत की कुछ बूंदें सुन ऊखुङ के हाथों पर छिड़क दीं और फिर उसे अपने साथ ऊच्वाङ मंदिर चलने को कहा।



सुन ऊखुङ देवी क्वानइन के साथ ऊच्वाङ मंदिर पहुंचा । फिर वे दोनों और महर्षि चनय्वान पीछे के उद्यान में गए, जहां सुन ऊखुङ ने जमीन पर गिरे पेड़ की जड़ों पर अमृत की बूंदें छिड़क दीं । क्षणभर में जमीन से एक सोता फूट निकला ।



सोते का स्वच्छ पानी धीरे-धीरे एक फव्वारे के रूप में जमीन से ऊपर उठ आया और उसकी रंगीन बूंदें पेड़ की डालियों व पत्तियों पर पड़ने लगीं। देखते ही देखते पेड़ की जड़ें जमीन के अन्दर चली गईं और वह फिर से हरा-भरा हो गया। इस प्रकार वह दिव्य वृक्ष पुनः जीवित हो गया। मंदिर में मौजूद सभी लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा।



तभी छिङफ़ङ ग्रौर मिङय्वे ने देखा कि पेड़ पर लगे फलों की संख्या में एक की वढ़ोतरी हो गई है, जिससे उन्हें बड़ा ताज्जुव हुग्रा। सुन ऊखुङ ने उन्हें वताया : "ग्राप दोनों का कहना था कि हमने चार फल खाए थे। वास्तव में एक फल जमीन पर गिरकर गायव हो गया था, जो ग्रव पेड़ पर पुनः लग गया है। ग्रव तो सारा मामला स्पष्ट हो गया न?" दोनों ताग्रो वालकों ने हाथ जोड़कर वानरराज सुन ऊखुङ से माफी मांगी।



महर्षि चनय्वान बेहद खुश हुए। छिङफ़ङ ग्रौर मिङ्य्वे लम्बी उमर देने वाले ग्रनेक "रनशन" फल ले ग्राए। वे सभी देवीदेवताग्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए एक समारोह ग्रायोजित करना चाहते थे।



मंदिर के वृहद भवन में शानदार भोज चल रहा था। इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों को सम्बोधित करते हुए देवी क्वानइन ने कहा : "आप सभी देवी-देवता आज के इस गौरवपूर्ण समारोह में भाग लेने आए हुए हैं। आइए, हम सब मिलकर खुशी मनाएं कि महर्षि चनत्सान और वानरराज सुन ऊखुङ आपस में सगे भाइयों जैसे बन गए हैं।"



ऊच्वान मंदिर के फाटक के सामने महर्षि चनय्वान व उनके बालशिष्य एकत्र हुए और उन सब ने अपने हाथ जोड़कर भिक्षु थाङसङ और वानरराज सुन ऊखुङ आदि को सप्रेम विदाई दी ।



गेरुआ वस्त्र पहने भिक्षु थाङसङ सफेद घोड़े पर सवार हो गए, और बौद्धग्रन्थों की प्राप्ति के लिए भारत जाने वाली भिक्षुओं की इस टोली ने वानरराज सुङ ऊखुङ के मार्गदर्शन में अपना आगे का सफर पुनः शुरू कर दिया।



प्रथम संस्करण १९८१

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : विदेशी भाषा मुद्रणालय
१९ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : क्वोची शूत्येन (चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र)
पो. ग्रा. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

18.00

人 参 果
梅 樱 编绘
＊
外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
外文印刷厂印刷
中国国际书店发行
1981年(横20开)第一版
编号:（印地）8050－2121
00180
88－H－194P